अम्मी गुजरी, झोपड़ी उजड़ी

—कौषलेंद्र प्रपन्न

एक निजी चैनल के रियल्टी षोज में सपेरन गुलाबो रानी को देख कर बाकी की प्रत्याषी तथाकथित मॉडल, डॉन्सर, अत्याधुनिक लुक वाली लड़कियों ने गुलाबो को जिस नजरीय से देखा गोवा वो किसी दूसरे लोक से आई हों। निष्चित ही वो जिस परिवेष, समाजो– सांस्कृतिक पृश्ठभूमि से आती हैं वो बाकी की कंटेस्टेंट से अलग हैं। बेषक, गुलाबो की भाशा, परिवेष, समाज अलग रहा है। लेकिन जिस वेदनापूर्ण बचपन से निकल कर इस कार्यक्रम में षामिल हुई हैं, वह भारत की अन्य लड़कियों की कथा–व्यथा से ख़ासे मिलती हैं। हाल ही में एक कार्यक्रम में एक महिला मित्र से मुलाकात हुई। उन्होंने जो अपने बचपन की हकीकत बताईं वो गुलाबो से काफी मिलती थी। एक ओर गुलाबो को जन्म के बाद मिट्टी में गाड़ दिया गया था। लेकिन उसे बचना था सो बच ही गईं। आज दुनिया भर में घूम रही हैं। वहीं दूसरी ओर उस मित्र को भी मां ने जन्मते त्याग दिया था। इसकी पीड़ा, वेदना आज भी उस मित्र की आंखों में साफ देखी जा सकती है। उनकी अम्मी को गुजरे एक अरसा हो चुका है, लेकिन आज भी उन्हें अपनी अम्मी से सिकवा है। घृणा है और अपनी अम्मी के प्रति उपेक्षा के भाव हैं। बचपन में उन्हें इसका इल्म नहीं था कि उनकी अम्मी ने ऐसा क्यों और किन परिस्थितियों में किया होगा। लेकिन आज जब उस घटना को याद करती हैं तो एक बार अतीत की घटी टीसने लगती है।

गुलाबो, मेरी मित्र और वैसी ही हजारों लड़कियां हैं जिन्हें अपने वजूद के लिए लंबी मषक्कत करनी पड़ती है। वह भी तब जब उन्हें कुछ भी बोध नहीं होता। लड़कियों को जद्दोज़हद ताउम्र करनी पड़ती है। कभी अपने ही नाते– रिष्तेदारों, भाई, भाई के दोस्तों, पापा, अंकल आदि की बुरी नजरों से। वहीं कभी अपने गुरुओं से। सिर्फ चेहरे और नाम अलग होते हैं। लेकिन ज़ोखिम एक– सी होती है। वही जब बड़ी होती हैं तब उन्हें न केवल खाने, षिक्षा, पहनावे आदि के लिए लड़ाई लड़नी पड़ती है, बल्कि ख़ुद को महफूज़ रखने के लिए पति, बेटे, भाई से भी कभी न कभी जुझना पड़ता है। जब षिक्षा की बात आती है तब उन्हें एक ख़ास स्कूल, तालीम की ओर मजबूरन मुड़ना पड़ता है। मसलन तालीम सिर्फ षादी से पहले समय काटने के तर्ज़

पर। लड़की जिस समाज से ताल्लुक रखती है उसे जैसा समाज जन्मना मिलाता है उसी के अनुसार उसकी ज़ोखिमें भी होती हैं। एक झुग्गी में जीवन बसर करने वाली पूजा, अर्चना या राधिका को घर में अपने छोटे–छोटे भाई– बहनों को पालने के लिए स्कूल से दूर कर दिया जाता है। वो लाख पढ़ने में अच्छी हो, आर्ट एंड क्राफ्ट में काफी आगे निकल जाने का माद्दा रखती हों। लेकिन उसे इन ख़्वाहिषों का गला घोट देना पड़ता है। उनकी आंखों से बरसती बेबषी देखकर कई बार सोचने पर विवष होता हूं कि क्या इन बच्चियों को इसी देष में समान षिक्षा, गुणवत्तापूर्ण तालीम पाने का बुनियादी हक मिला हुआ है। जिन्हें स्कूल जाने के वक्त भाई, पिता की ओर से बाधाओं को पार कर बचते बचाते जाना होता है।

हम पढ़े–लिखे लोगों, समाज के आस– पास ही ऐसी हजारों लड़कियां हैं जिन्हें हमसब रोजदिन देखते और उन्हें नजरअंदाज़ कर आगे बढ़ जाते हैं। जिनके पास किताब, कॉपी तो बहुत दूर की बात है उनके पास स्कूल जाने के सपने देखने की हिम्मत भी नहीं होती। क्योंकि सपने दिखाने वाले कम उसे कुचलने वाले हमलोग होते हैं। हम अपने बच्चों के इस्तेमाल की हुई पुरानी किताबें, कॉपियां, पेंसिल आदि दे सकते हैं। लेकिन हकीकत यह है कि हम उन्हें किताबें देनी की बजाए गालियां मुफ्त में देकर आगे बढ़ जाते हैं। क्या वास्तव में हम एक सजग, जागरूक सामाजिक कहला सकते हैं?

पिछले दिनों कुछ ऐसी ही बच्चिों की बनाई पेंटिंग्स की प्रदर्षनी श्रीफोर्ट में लगा था जो सड़कों, रेलवे स्टेषन और पार्कों आदि में ही अपने दिन की षुरुआत करते हैं। लेकिन कुछ एनजीओ ने इन बच्चों के सपनों, रंगों और इच्छाओं को कैंवस मुहैया कराया। इन बच्चियों की पेंटिंग्स में चटक लाल, पीले, हरे और काले रंगों का इस्तेमाल बहुतायत में किया गया था। पूछने में इन बच्चियों की दुनिया की झलक मिलती थी। एक बच्ची ने अपनी झोपड़ी में काले और लाल रंग का प्रयोग किया था उससे बातचीत में मालूम हुआ कि उसकी झोपड़ी को पुलिस वालों ने अगस्त में आग लगा दी थी। लाल रंग उसके काफी करीब है। उसे यह रंग बेहद पसंद है। वहीं कुछ दूसरी बच्चियों की पेंटिग्स में बच्चे नदारत थे। जो कि मुझे सोचने पर विवष किया कि आख़िर इनकी पेंटिग्स में बच्चे कहां गए? आख़िरकार पूछ ही डाला तो जवाब मिला बनाना तो चाहते थे लेकिन भूल गई। दरअसल इस सवाल का जवाब एक बच्ची से मिला कि जब हमारी झोपड़ियों को जला और उखाड़ दिया गया तो सारे के सारे बच्चे सड़क पर आ गए।

इन्हीं बच्चियों में से कुछ स्माइल पिंकी, फरिदा पिंटो, पेंटर, तस्लीमा नसरीन, चांद कोच्चर भी बनती हैं। या किसी पब में गला घोटकर मार दी जाती हैं। लड़कियों पूरी ज़िंदगी कदर पूर्वग्रह और भेदभावपूर्ण व्यवहारों का सामना करना पड़ता है वह तमाम सभ्य समाज, सरकार एवं विकास की धज्जियां उड़ा देती हैं।

कौषलेंद्र प्रपन्न

6/54, विजयनगर, डबल स्टोरी, दिल्ली–9

9891807914